पहलां बधावज्यौ लोटचा जाट ने पछै घर रौ सांम जी ।
ठाकुर तन्नैं बेटो देज्यौ रहज्यौ अमर नांव जी ।
खारे वाळी मेड़तयाणी भलो डूंग नर जायो जी ।
खारे वाळी मेड़तयाणी भलो डूंग नर जायो जी ।
आगरै रौ किलो तोड़ने नीकळ साबत आयौ ।
डूंगसींघ ने लेगा जोधपर जवार बीकानेर जी ।
डूंघसींघ ने लेगा जोधपर जवार बीकानेर जी ।
काके भतीजै मन में रहगी लूटण री अजमेर ।
झड़गा तो फूलड़ला अमर बां री बासना ई जी ।।

**गीत ठाकर जुवारसिंघ डूंगरसिंघ सेखावत रो**

... .....

.....।

.....,

राह चक्र मचायौ जंवारा आडी रेख ।।१
है खुरां पड़ल्लां जागी नाळ री-सी बोच हौदां,
रौदां सीस बागी प्रळैकाळ री-सी रीठ ।
झळैवा नासिका जगै सेस पंखां झाळरी-सी,
दलेल सवाई प्रळैकाळ री-सी दीठ ।।२
बींटियौ चकाबां बीच फिरंगां फैल री बाजी,
जकाबां सेलरी हूंस धार लीधी जीफ ।
खाबां चोट खेलरी सराबां आयौ हंस खेल,
ताबां कूं कठांक तांई सेलरी तारीफ ।।३

---

खारेवाळी–खारिया नामक ग्राम की । मेड़तयाणी–मेड़तिया शाखोत्पन्न नारी रत्न जो डूंगरसिंह की माता थी । जायो–जन्म दिया, उत्पन्न हुआ । लूटण री–लूटने की ।

राह चक्र–राहु के चक्र की भाँति अंग्रेजों का मारा । जंवारा–ठाकुर जवाहरसिंह ने । आडी रेख–बेहद, अत्यधिक । है खुरां–अश्वों के सुमों की चौटें । पड़ल्लां–पदतलों, पद चरणों । नाळ री–तोप की । हौदां–हौदा, कटहड़ा । रौदां–शत्रुओं के । बागी–बजी, चली । प्रळैकाळ–प्रलयकालीन । रीठ–प्रचण्ड शस्त्राघात । सेस–शेषनाग के । पंखां–पंखों की । झाळ–ज्वाला । दलेल–ठाकुर दलेलसिंह जो जवाहरसिंह के पिता थे । दीठ–दृष्टि । बींटियौ–घेरे में लिया । चकाबां–चक्रव्यूह । फिरंगां–अंग्रेजों के । फैल री–फितूरपन की । जकाबां–जो उन्होंने । हूंस–उल्लास, डाह । जीफ–विजय । खाबा चोट–प्रहार झेलने । सराबा–सराहना । हंस खेल–हँसी खेल, विनोद, सूर्य । कठां-तांई–कहाँ तक । सेल री–भाला की ।



बिड़गां ऊपड़ी बाग तूटती बीजळां बाढ़,
सोर झळां वूठती अराबां हेक साथ ।
पांणां झाट सा....री चखाई पैलां दळां पाई,
बीजाई सेवा बताई तमासा वाळी बात ।।४
पीढ़िया प्रवाड़ा जैत पांणां जोम छक छाई,
रवाई सिवाड़ा दीह दिखाई आरीत ।
बामराडां धकै चाढ़ लेगयौ फिरंगी बाड़ा,
जोह ओह धाड़ा रे जुहारा राड़ा-जीत ।।५

**गीत ठाकर जवाहर सिंघ सेखावत पाटोदा रो**

रचे आहवां सूरता दीखाई जिकां सिरै, मरद हद वीरता रखी जुध मांझ ।
अरचां सिर बाणांसां योहिज काटिया, रंग जिम लाल रंग अंधेरी सांझ ।।१
देखने कंप कंपी भीरुवां दिलां मांह ऊपजी मनां हमगीर आछी ।
मुगट मिण तोड़िया कितांही, दौड़ता मारिया उमंद काछी ।।२

---

प्रवाड़ा–कीर्ति-प्रवाद, प्रशस्ति । जैत पांणां–विजय प्राप्त करने का, भुजबल से विजय प्राप्त करने के । जोम–जोश, उत्साह । छक छाई–मस्त होकर । रवाई–रावपन, सीकर तथा श्यामगढ़ के स्वामी 'रावजी' के कहलाते हैं । इनके पूर्वज त्रिमल्ल को राव का पद प्राप्त हुआ तब से त्रिमल्ल की सन्तान 'रावजी' का शेखावत कहलाते हैं । गीत नायक राव त्रिमल्ल के वंशज राव शिवसिंह सीकर नरेश की सन्तति में थे । अतः उन्हें रावजी का कहा गया है । सिवाड़ा–सिवाय, अधिक । दीह–दिवस । बामराडां–जबरदस्ती, बलपूर्वक । धकै चाढ़–सामने से उलटे पांव धकेल कर । फिरंगीबाड़ा–अंग्रेजों की रक्षापंक्ति, अंग्रेजों की सेना । धाड़ारे–शाबाश वाह वाह । जुहारा–ठाकुर जवाहरसिंह शेखावत । राड़ाजीत–युद्ध विजयी ।

बिड़गां–घोड़ों की । बाग–लगामें । बीजळां–तलवारें । बाढ़–धाराएँ । सोर–झळां–बारूद ज्वालाएँ । वूठती–वर्षा करती । अराबां–तोपें, तोपखानों की । हेक–एक । पांणां–हाथों, शक्ति पूर्वक । झाट–प्रहार । पैलां दलां–शत्रु समूह, विपक्षी समूह । बीजाई–द्वितीय । सेवा–राव शिवसिंह सीकर की सन्तति वाले ।

आहवां–युद्धों में । सूरता–शूरवीरता । सिरै–श्रेष्ठ, बढ़ कर । हद–सीमा तीत, बेहद जुधमांझ–युद्ध में । अरच–बैरियों के । बाणांसां–तलवारें । काटिया–काटे मारे । लालरंग–लोहू । सांझ–संध्या । कंपकंपी–कम्पन । भीरुवां–कायरों । ऊपजी–उत्पन्न हुई । हमगीर–सहायकपन । भुगट–भृकुटी, सिर । कितांही–कितने ही । उमंद–उम्दाह, अच्छी नस्ल के । काछी–घोड़े ।